12.5 म० प०

[अनुवाद]

ईरान-ईराक युद्ध के विस्तार से उत्पन्न स्थिति के बारे में वक्तव्य

प्रधान मंत्री (श्री राजीवगांधी)— माननीय सदस्यों को पता ही है कि से ईरान इराक में साढ़े चार वर्ष चले आ रहे युद्ध का पिछले कुछ सप्ताह में काफी विस्तार हुआ है। हाल की स्थिति का अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण मोड़ यह है कि दोनों देशों द्वारा युद्ध का विस्तार नागरिक लक्ष्यों एवं आवासीय क्षेत्रों में किया गया, जिसमें राजधानियों तथा डाक एवं अन्य नागरिक केन्द्रभी सम्मिलित हैं, जिससे बहुत से नागरिकों की जानें गईं तथा सम्पत्ति विनष्ट हुई। यह भी आरोप है कि रासायनिक शस्त्रों-का भी उपयोग हुआ।

हम, भारत के रूप में और 'नाम' के चेयरमैन के रूप में इन घटनाओं से अत्यन्त चिन्तित और स्तब्ध हैं। हमारे दोनों देशों के साथ प्राचीन काल से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं तथा संघर्ष के शुरू से ही दोनों देशों से हम आग्रह करते आये हैं कि युद्ध समाप्त कर अपने मतभेद शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा बातचीत से दूर करें। इस प्रकार की वृहद सैनिक कार्यवाहियों से केवल उन बाह्य शक्तियों को लाभ पहुंचता है जो इस क्षेत्र में शान्ति और स्थिरता के विरुद्ध हैं। पिछले सप्ताह मैंने दोनों देशों के महामहिम राष्ट्रपतियों को व्यक्तिगत रूप से पत्र लिखकर युद्ध समाप्त करने की दशा में पहले कदम के रूप में नागरिक लक्ष्यों पर, हमले बन्द करने की अपील की थी जैसा कि दोनों देश संयुक्त राष्ट्र महासंघ के महासचिव के साथ 12 जून, 1984 को हुए समझौते के अनुसार इससे सहमत हो गये थे। मैंने इसके साथ ही सचिव स्तर के विशेष सन्देशवाहक भेज कर इस बात को आगे बढ़ाया, तथा पिछले रविवार 16 मार्च को मेरे व्यक्तिगत सन्देश दोनों राष्ट्रपतियों को पहुंचा दिये गये।

मंगलवार 19 तारीख को ईरान के विशेष दूत, जो कि अपने राष्ट्रपति से मेरे लिए संदेश लाये, के साथ लम्बी बातचीत की। राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन से भी मुझे पत्रोत्तर मिल गया है।

चूंकि युद्ध में कोई कमी नहीं आयी अतः मैंने बगदाद तथा तेहरान को उच्च स्तरीय शिष्ट मंडल भेजे। विदेश मंत्रालय में राज्य मन्त्री श्री खुर्शीद आलम खां कल विदेश सचिव श्री रमेश भण्डारी के साथ गये हैं। वे दोनों देशों की राजधानियों में जाकर पूरे 'नाम' की ओर से चिन्ता व्यक्त करेंगे। वे भारत की ओर से तथा सभी निर्गुट देशों की ओर से पहले कदम के रूप में नागरिक लक्ष्यों पर हमले करने, युद्ध बन्दियों की अदला-बदली तथा खाड़ी में नागरिक पोतों पर हमले करना तुरन्त समाप्त करने का आग्रह करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि सभा श्री खुर्शीद आलम खां के इस अभियान की सफलता की कामना में मेरा साथ देगी।

12.8 म० प०

[अनुवाद]

सभा-पटल पर रखे गये पत्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का वर्ष 1983-84 का वार्षिक प्रतिवेदन एवं समीक्षा, मालवीय क्षेत्रीय इंजिनियरी कालेज, जयपुर, मौलाना आजाद कालेज आफटे कनालोजी भोपाल, तथा कर्नाटक क्षेत्रीय इंजिनियरी कालेज सूरथकल के वर्ष 1983-84 के वार्षिक प्रतिवेदन और लेखा-परीक्षा लेखे

सिंचाई और विद्युत मंत्री (श्री बी० शंकरानन्द) : मैं श्री कृष्णचन्द्र पंत की ओर से अग्रलिखित पत्र सभा-पटल पर रखता हूं :